हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 10

कामायनी का रस निर्णय / अंगीरस

अंगीरस से तात्पर्य मुख्य रस से होता है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार 'बहुव्याप्ति' वाले रस को ही सामान्यतः अंगीरस माना जाता है लेकिन कभी-कभी यह लक्षण पर्याप्त नहीं होता। ऐसी स्थिति में रचना के प्रमुख पात्र की मूल प्रवृत्ति का प्रतिफलन कराने वाले अथवा रचना के अंत में उपलब्ध होने वाले रस को अंगी रस माना जाता है। कामायनी के अंगीरस का निर्णय इन्हीं कसौटियों के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

कामायनी में विविध रसों का पर्याप्त चित्रण हुआ है। श्रद्धा एवं मनु के प्रणय-प्रसंग में संयोग-शृंगार, श्रद्धा के विरह में विप्रलंभ शृंगार, प्रलय के चित्रों में भयानक रस, पशु हत्या के प्रसंग में वीभत्स रस, शिव के तांडव नृत्य तथा रहस्य सर्ग में अद्भुत रस, संघर्ष सर्ग में वीर रस व चिन्ता तथा

निर्वेद सर्गों में शांत रस मिलता है।

बहुव्याप्ति के आधार पर विश्लेषण करें तो कामायनी में दो ही रस प्रमुख हैं:- श्रृंगार तथा शांत। श्रृंगार रस व्याप्ति की दृष्टि से सर्वाधिक मात्रा में है यह प्रमुख रचना के पूर्वार्ध में श्रद्धा - मनु के प्रणय - प्रसंग में आया है रचना के उत्तरार्द्ध में भी श्रद्धा का थोड़ा सा विप्रलम्भ श्रृंगार है।

बहुव्याप्ति की दृष्टि में कामायनी में श्रृंगार के उपरान्त शांत रस की प्रमुखता दिखती है काव्यशास्त्र में शांत रस के दो प्रकार माने जाते हैं:- निर्वेदमूलक शांत, तथा शममूलक शांत। निर्वेदमूलक शांत रस में व्यक्ति संसार के दुःखों से थककर व परेशान होकर विरक्त हो जाता है। चिंता तथा निर्वेद सर्गों में मनु के मन में यही भावदें

किन्तु इसे अंगीरस मानना संभव नहीं है क्योंकि यह मात्रा में तो शृंगार की तुलना में काफी कम है ही। रचना की परिणति अर्थात् फलागम में भी उपस्थित नहीं है। फलागम में मनु थके हुए या पराजित व्यक्ति नहीं बल्कि अति आनंदित दिखाई देते हैं।

तीसरा विकल्प शममूलक शांत का है। शममूलक शांत को काव्य शास्त्र में निम्न रूप में परिभाषित किया गया है:-

"न यत्र दुःखं न सुखं न चिंता, न द्वेषरागौ न च काचिदिच्छा
रसः स शांत कथितो मुनीन्द्रैः सर्वेषु भावेषु शमः प्रधानः।"

अर्थात् जिसमें न दुःख हो न सुख हो, न कोई चिंता हो, न कोई राग-द्वेष हो और न कोई इच्छा ही शेष हो, उसे मुनि शांत रस कहते हैं। कामायनी में देखें तो रहस्य सर्ग के अंत में इसी की अनुभूति होती है।

यदि कामायनी का अंत 'रहस्य सर्ग' है स्पष्ट है कि कामायनी का रस निर्णय बहुव्याप्ति की दृष्टि से नहीं हो सकता क्योंकि व्याप्ति की दृष्टि से दो ही रस महत्वपूर्ण रस है। शृंगार तथा निर्वेद शांत; किन्तु परिणति में दोनों ही अनुपस्थित है साथ ही दोनों रस रचना के मूल उद्देश्य से भी असंगत है।

प्रस्तुतकर्त्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजा नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० न०- 8292271041

दिनांक
21/10/2020